शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसंबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मेहरुन्निसा परवेज के साहित्य में आदिवासी

डॉ.पिंकी पारीक
हिन्दी विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

पहाड़ियों तथा जंगलों के निर्दोष संसार के निवासी को आदिवासी, आदिम जाति, जनजाति, अनुसूचित जनजाति, वनवासी, काननवासी, आरण्यक आदि अनेक नामों से हमारे समाज में पहचाने जाते हैं। जंगलों के बीच इनका सरलतम और तनावहीन समाज वर्षों से अस्तित्व में है। यह विश्व के अनेक भागों में पाए जाते है। सभ्य समाज उन्हें पिछड़े वर्ग का मानते हैं, क्योंकि वे प्रगतिशील संसार से अपरिचित और जंगलों के एकांत जीवन से बाहर नहीं आना चाहते। यह भी सत्य है कि अन्य लोगों की तुलना में वे अधिक स्वाभाविक और तनावहीन जिन्दगी जी रहे है। मेहरुन्निसा परवेज ने अपने साहित्य में पहले मध्यप्रदेश (और अब छत्तीसगढ़) में स्थित बस्तर जिले के आदिवासियों के जीवन का उल्लेख किया है। लेखिका ने बस्तर के बीहड़ वनों की संस्कृति एवं सभ्यता को पाठकों के समक्ष अपने कथा साहित्य के द्वारा उदघाटित किया है।

शोध संक्षेप

प्रकृति की गोद में बसने वाले आदिवासी जंगल से इस कदर जुड़े हैं कि उसके बगैर उनका जिन्दा रहना मुश्किल है। यह जंगलवासी न तो प्रकृति से अपने आपको अलग रख सकते हैं और न ही इसका शोषण करते हैं, बल्कि वे इसमें घुल-मिलकर प्रकृति का एक भाग बन जाते हैं। बस्तर के जंगलों में प्रकृति का सम्पूर्ण वैभव दूर-दूर तक नजर आता है और यह आँखों को ठंडक पहुँचाने में सक्षम है। इन जंगलों ने यहाँ के वासियों की हर जरूरत को पूरा किया है। इन घनघोर जंगलों के टेढ़े.-मेढ़े वन. पथों को ढूंढ कर इसके हृदय भाग तक पंहुचना बाहरी व्यक्ति के लिए दुष्कर है। यहाँ के आदिम समुदाय अपने जीवन में बाह्य हस्तक्षेप पसंद नहीं करते हैं। शायद इसलिए यह वन्य प्रदेश आज भी सुरक्षित है। इंद्रावती नदी यहाँ के लोगों के लिए प्रेरणादायक है।

निवास, भोजन एवं वस्त्र विन्यास

बस्तर के आदिम समुदाय के लोग स्वतंत्र रूप से जीवन व्यतीत करने वाले हैं। वे लोग जंगलों में ही रहना पसंद करते है। साफ ऊँचा टीला देखकर वे लोग अपना घर बनाते हैं। उस पर पहाड़ या पहाड़ी के उतार पर ही गाँव बसाया जाता है। उन्हें जंगली जानवरों की बिल्कुल परवाह नहीं है। लोग निडर होकर पूरे जंगल में अकेले घूमते हैं। उनके घर की दीवारें मिट्टी की बनी होती हैं। उनके ऊपर फूस का छप्पर होता है। विशेष अवसरों पर फर्श को गोबर से लीपते हैं और दीवारों पर मोर पंख से अनेक आकृतियाँ बनाते हैं। यहाँ के लोग खेती-बाड़ी में ज्यादा ध्यान नहीं देते हैं। फिर भी ये कोसरा, सवा, उड़द, सेमी, सरसों, मूंग, अरहर आदि की खेती करते हैं। फसल अच्छी हुई या बुरी इसका इन लोगों पर विशेष असर नहीं पड़ता है। जंगली जानवरों से खेतों को बचाने के लिए ये लोग मरी हुई गाय

या भैंस के सिर को खूटें से लटका देते है। चिरोंजी बस्तर में काफी मात्रा में पाई जाती है। आदिवासी इसके महत्व को नहीं जानते इसलिए वे नमक के बदले चिरोंजी बेच आते हैं, जो शहर में ऊँचे दामों पर बिकती है और इससे व्यापारियों को काफी मुनाफा होता है। इन्हीं जंगलों में से आदिवासी महुआ, हर्रा आदि बीनकर सुरक्षित रखते है जो पूरे साल कम आता है। इन्हीं पहाड़ियों पर बेशकीमती जड़ी-बूटियां भी सुलभ हैं, जो हर बीमारी का इलाज प्राकृतिक रूप से कर देती है। खाने-पीने के मामले में बस्तर के आदिवासियों को किसी प्रकार की चिंता नहीं होती है, क्योंकि वे अपने खान-पान की पूर्ति प्रकृति प्रदत्त भोज्य पदार्थों से करते है। ये लोग नाना प्रकार के कंदमूल खाते है। पेज; (दलीया) यहाँ के लोगों के भोजन का प्रमुख अंग है। पेज बनाने के लिए जुवारी माडिया, चावल, कोदो या जोहरे का आटा बनाकर या पानी में रात भर भिगोकर उसे पत्थर से पीसते है। हांड़ी भर पानी डालकर देर तक आग पर पकाते हैं। उबल जाने पर खटाई डालकर उतार देते हैं। इसे पेज कहते हैं। सेमरा और माडपाल के अधिकतर लोग चावल की खेती करते हैं और वहाँ का मुख्य भोजन भी यही है। कुछ प्रदेशों में मक्के की रोटी, आलू का साग गुड़ के गुलगुले आदि को भोजन के रूप में खाते हैं। अम्बादे के पतों की सकी बनाई जाती है, जिसे खट्टा साग कहते हैं। शराब आदिम संस्कृति का अभिन्न अंग है। इसके बगैर उन लोगों का कोई भी पूजा-त्यौहार या ख़ुशी पूर्ण नहीं मानी जाती है। बस्तर प्रदेश में नशे के लिए महुआए, सल्फी और ताड़ी का उपयोग किया जाता है। जिसका वर्णन 'उसका घर' उपन्यास में लेखिका ने किया है। आदिम जाति के लोग कपड़े कम मात्रा में पहनते हैं। स्त्री-पुरुष कमर पर ढेढ़ हाथ के कपड़े की लंगोटी बांधते हैं। बाकी शरीर खुला रखते है। गले में ढेर सारी मालायें पहनते हैं। लेकिन आजकल जगदलपुर और शहर के निवासियों का रहन . सहन देखकर कपड़ों का इस्तेमाल ज्यादा करने लगे हैं। बस्तर में सभी लड़कियां अपने शरीर पर विभिन्न आकृतियाँ गुदवाती हैं, यह श्रृंगार करने का पुराना तरीका है। गोदना गुदवाना इन आदिवासियों में एक व्यक्तिगत सजावट के रूप में प्रारंभ हुआ है। बस्तर में यह विश्वास है कि गोदना गुदगी से रोग, भूत, बुरी आत्मा नहीं लगती है। माना जाता है कि लड़कियों का सौंदर्य और भाग्य इससे निखर जाता है।

धार्मिक जीवन

बस्तरवासियों का विश्वास है कि इस माटी के कण-कण में देवी-देवता का वास है। ये लोग वन, झाड़, झाकड़, नदी, पहाड़, नाले, तलैया सभी में देवताओं का दर्शन करते हैं। लेकिन मूल रूप से ये लोग माँ दंतेश्वरी की पूजा करते हैं। बस्तर में जादू-टोना का बहुत प्रचलन है। बाहरी दुनिया जिसे अन्धविश्वास कहकर नकार देती है वही आश्चर्यचकित कर देने वालों के रूप में यहाँ दिखाई देती है। बस्तर के लोगों का विश्वास है कि टोना द्वारा कुछ भी पाना संभव है। 'कोरजा' उपन्यास में नानी कहती है कि अगर हांड़ी में बरसात के पानी को जमा कर उसे मंत्र पढ़ जमीन में गाड़ दें तो पानी को बांधा जा सकता है। माना जाता है कि अगर किसी कुवांरी कन्या को नग्न करके उसके हाथों सूप में राख रखवाकर फटकवा देने से जो राख उड़ती है उससे पानी से भरे बादल उड़ जाते हैं। इस राख को उल्टा पड़ने से यह बंधा भंग खुल जाता है और वर्षा होना शुरू हो जाती है। आदिवासियों के त्यौहार उनके संघर्षशील और श्रमसाध्य जीवन में पूरे वर्ष

उल्लास और मधुरता घोलती है। ये उत्सव त्यौहार, मेला, तमाशा, हार आदि ही इन्हें जिंदगी के प्रति उत्साह प्रेरणा देते हैं। यह उनके जीवन में स्फूर्ति और चेतना का संचार करते हैं। आदिवासी समुदाय सुरक्षित होकर अपनी जिंदगी में जब एक वर्ष जी लेता है या पूरा कर लेता है तब वह उल्लास प्रकट करने के लिए देवी शक्ति की आराधना करते हैं।

मंडई हर साल फ़रवरी-मार्च में लगता है। मेले के बीचोंबीच मंडप में उस गाँव के देवी और दूसरे गाँव के देवता गाजे-बाजे के साथ विराजमान रहते हैं। अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए यह लोग पुजारी को चढ़ावे में पैसे देते हैं। बस्तर के मंडई सिर्फ खरीदारी की जगह न होकर बिछड़े दिलों का मिलन स्थल भी है। यहाँ हमें मानवीय संबंधो के बनते-बिगड़ते दृश्य देखने को मिलते है। बरसों से तरसी आँखे, तितर-तितर कर भीड़ के रेले को चीरती इधर-उधर बहकर बिछड़े प्रेमी को खोज रही थी...बरसों से बिछड़े अपने परिवार से मिलती औरतें प्रसन्नता से फूली न समां रही थीं। यौवन के माहौल से पूरा माहौल खिलखिलाहट से भरा होता है। शहरी युवक अपने पापी मन को पैसों की तड़क-भड़क से ढ़ककर यहाँ भी युवतियों को आकर्षित करने की कोशिश करते हैं। सूरज के ढ़लने के साथ ही मेले में अपवित्र इरादों से वातावरण बोझिल हो जाता है। मेला जहाँ दिन में पवित्र था वहीं रात को गुनाहों से भरपूर था।

आदिवासी परिवार अपने खाद्यान व उपज को बेचने और बदले में आवश्यकताओं की वस्तुएं खरीदने इन मेलों में आते है। आर्थिक और व्यावसायिक उपयोगिता के साथ इनका सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू आदिवासियों के जीवन का अभिन्न अंग है। आदिम जातियों में विवाह दो परिवारों के संयोग का प्रतीक है। यह एक सामूहिक घटना है जो पुरुष और स्त्री को दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने की सार्वजनिक स्वीकृति प्रदान करती है। बस्तर में बाल-विवाह की प्रथा नहीं के बराबर है, फिर भी कुछ जातियों में बचपन में महिला लंगरी कर देने की प्रथा पाई जाती है। अगर जवान होने पर बचपन में रिश्ते तोड़ दिया जाएँ तो बिरादरी द्वारा दंड दिया जाता है। विवाह अक्सर अठारह-बीस वर्ष की उम्र के बाद ही होता है। कुछ जातियों में घर जमाई रखने का भी रिवाज है। विवाह से पूर्व लड़के को लड़की के घर में एक साल तक रहना होता है। लड़का आर्थिक मदद के साथ-साथ घरेलू कार्यो में हाथ बंटाता है। उसके बाद लड़की को सौंपा जाता है। साथ ही मंगनी, शगुन, मंडप, बारात यह सारी रस्में भी आदिवासी समाज में निभाई जाती हैं।

आदिवासी शोषण

वर्षो से निर्बल पर अत्याचार होता आया है। सबल और चतुर लोग बुद्धि .शक्ति धन बल और अधिकार के द्वारा गरीब का शोषण करते आये हैं तथा इसके लिए वे धर्म की दुहाई देते हैं। विज्ञान के प्रभाव व शिक्षा से लोगों में जागरूकता आई है, लेकिन इन वनवासियों की स्थति अभी भी कष्टप्रद है। इनके शोषण के लिए पूंजीवादी वर्ग कोई कसर बाकी नहीं छोड़ता है। परिश्रम करने के बावजूद भी वे दो वक्त की रोटी नहीं जुटा पाते। परिवर्तन की दौड़ में उनके अपनी संस्कृति और रहन-सहन को वे पूर्ण रूप से न तो जीवित रख पा रहे हैं और न छोड़ पा रहे हैं। साथ ही स्त्रियों पर भी अत्याचार हो रहे हैं। अनपढ़ आदिवासी यह सब अपना नसीब समझकर भोग रहे हैं।

बस्तर की संस्कृति और आराध्य देवों का परिचय अन्य लोगों तक पँहुचाने का श्रेय घड़वा जाति को है। घड़वा का शब्दिक अर्थ है घड़ने वाला। घड़वा समाज के लोग अपनी काल्पनिक शक्ति से देवी.देवतओं की पीतल की मूर्तियां बनाते हैं। लेकिन वे लोग इन मूर्तियों का मोल नहीं जानते और बाहरी लोग इसका मोल जानते है और वहाँ इसकी नक़ल करके हज़ारों-लाखों का व्यापार करते हैं। इस कला में जान फूंकने वाले कुंठित हैं, अभावग्रस्त हैं, क्योंकि वह पढ़ा-लिखा नहीं है, वह नहीं जानता कि उसकी बनाई मूर्तियों का बाहर क्या मूल्य है। आदिवासियों का सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, संस्कृतिक जीवन धर्म द्वारा परिचालित होता है। उनके सम्पूर्ण जीवन में बिन्दु धर्म है। लेकिन अन्य धर्मों के लोगों के हस्तक्षेप के कारण उनका सरल व निश्चल जीवन का नाश हो रहा है। 'कोरजा' में बताया है कि इनके भोलेपन का फायदा बाबा बिहारीदास ने खूब उठाया है। इन्होंने अपनी पूरी सम्पति बाबा के चरणों में समर्पित कर दी। यह लोग शराब मांस छोड़कर अपने घरों के जानवर सस्ते दामों में बेच आये। जब होश आया तो वे गरीब हो चुके थे। इनकी अज्ञानता का दूसरों ने हमेशा फायदा उठाया। अपने सरल और मासूम स्वभाव के कारण आदिवासी लड़कियां जिंदगी भर मायूसी और अभावग्रस्त जीवन जीने पर मजबूर हो जाती हैं। शहरी बाबू इनको अपने माया जाल में फँसा लेते है। 'कोरजा' उपन्यास में कलेक्टर के आर्डर के अनुसार वासना का शिकार बनने वाली आदिवासी लड़कियों से शहरी बाबुओं को शादी करनी पड़ती है, जिनकी उन्होंने दुर्गति की है। लेकिन ट्रांसफ़र के वक्त यह शहरी इन भोली भाली लकड़ियों को गाँव छोड़ जाते हैं और यह आधी शहर और आधी गाँव की होकर रह जाती है। अब उनकी जाति का कोई युवक उन्हें पसंद नहीं करता और स्वीकार करता भी है तो इन लडकियों को गाँव के युवकों की अदाएं नहीं भाती। इनकी सोच के अनुसार बाबू के पास पैसा था और वह अपने आपको साफ रखता था। उनका प्यार करने का भी एक अलग अंदाज था, जिसे वे भूला नहीं पाती।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि मेहरुन्निसा परवेज के साहित्य में आदिवासी जीवन का सम्पूर्ण चित्र हमारे सामने आकर रूप ग्रहण कर लेता है। इनके साहित्य के माध्यम से हम आदिवासी के निष्कलंक जीवन की सभ्यता, संस्कृति, रहन-सहन आदि से परिचित हो पाते हैं। शहरीकरण और बाजारीकरण के कारण शोषकों के हाथों मानसिक व शारीरिक शोषण से ग्रस्त इन आदिम जातियों की आज की स्थिति से भी हम परिचित हो सके। आदिवासियों का भोलापन और अज्ञानता का नाजायज फायदा बाहरी दुनिया के लोग उठा रहे हैं। राष्ट्रीय हित के नाम पर इनका शोषण हो रहा है। नगर निवासियों की नक़ल करने की होड़ में वे प्राकृतिक सौन्दर्य से हाथ धो रहे हैं। यह लोग भौतिक सुख-सुविधाओं को अपनाना चाहते हैं, लेकिन जन्म-मरण, शादी-ब्याह, बीमारी, प्राकृतिक प्रकोप आदि की वजह से वे अपनी संस्कृति को छोड़ नहीं पा रहे हैं। बस्तर के निवासी सांस्कृतिक विलम्बन के काल से गुजर रहे हैं। मेहरुन्निसा परवेज ने अपने साहित्य में आदिवासी समुदाय का समग्र चित्रण किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 Amitabh Sarkar & Dasgupta Spectrum of Tribal of Bastar, p.p 5

2 कोरजा, मेहरुन्निसा परवेज, पृष्ठ 218

3 Amitabh Sarkar & Dasgupta Spectrum of Tribal of Bastar, pp, 18

4 उसका घर, मेहरुन्निसा परवेज, पृष्ठ 69

5 कोरजा, मेहरुन्निसा परवेज, पृष्ठ 218

6 अकेला पलाश, मेहरुन्निसा परवेज, पृष्ठ 229

7 अकेला पलाश, मेहरुन्निसा परवेज, पृष्ठ 230

8 कोरजा, मेहरुन्निसा परवेज, पृष्ठ 104

9 कोरजा, मेहरुन्निसा परवेज, पृष्ठ 105

10 कोरजा, मेहरुन्निसा परवेज, पृष्ठ 106

11 कोरजा, मेहरुन्निसा परवेज, पृष्ठ 107